E-Content-05
(Inclusive Education)

श्रवण बाधित बालकों की पहिचान

Identification of Hearing Impaired children

श्रवण बाधितो की पहिचान कुछ आधारो पर की जा सकती है।

विकासात्मक मापनी Developmental scale- ऐसे बालको की पहचान के लिये उनकी विकासात्मक अवस्था का ध्यान रखा जाता है। बालक के विकास की अवस्थाओ का सम्बन्ध उसकी ज्ञानेन्द्रियों के विकास से होता है। विकासात्मक मापनी का प्रयोग कर बालक की आरम्भिक अवस्था मे निदान हो जाता है।

मनोनाड़ी परीक्षण Neuro-Psychological Test- इस मापनी की सहायता से श्रवण बाधितो से सम्बन्धित नाड़ी की क्रियाओ का आकलन किया जाता है। इसका कारण मानसिक दोष होता है।

डॉक्टरी परिक्षण Medical Examination- इस परीक्षण द्वारा ऐसे बालको की पहिचान सुगमता से हो सकती है। इसमे चिकित्सक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

बालक का सकल अध्ययन Case Study of the child

यह सबसे उत्तम विधि है इसके अर्न्तगत जन्म से लेकर वर्तमान स्थिति तक की सभी प्रकार से बालक से सम्बन्धित सूचनाओ को

Scanned by TapScanner

एकत्र कर श्रवण बाधिता के सही कारणों को जानने का प्रयास किया जाता है कि बालक कब बीमार हुआ तथा किन बीमारियों से पीड़ित रहता है।

5. बालक के व्यवहार का निरीक्षण Systematic observation of the child behaviour - इसमें बालक के निरीक्षण द्वारा उसकी श्रवण बाधिता को ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है। यह अत्यधिक उपयोगी विधि है। for e.g. बालक एक तरफ सिर को मोड़कर सुनने का प्रयास करता है, पाठ्यवस्तु को दोहराने के लिये कहना आदि।

श्रवण बाधित बालकों की विशेषताएँ Characteristics of Hearing Impaired Children - श्रवण बाधित बालक पढ़ने लिखने तथा सांकेतिक भाषा में अपनी बात कहने में समर्थ होते हैं अतः ये दृष्टिहीन बालकों से अत्यधिक क्रियाशील होते हैं। इन बालकों की पाँच मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ होती हैं-

1. भाषा तथा वाणी का विकास Language and Speech Development - ऐसे बालकों में भाषा का सामान्य विकास गहन प्रशिक्षण द्वारा सम्भव है। भाषा के उच्चारण दोष होने पर विशिष्ट प्रशिक्षण आवश्यक है। ऐसे बालक बहुत कम भाषा का प्रयोग करते हैं।

2. बौद्धिक योग्यता का विकास Intellectual Development श्रवण बाधित बालकों का मानसिक विकास तथा चिन्तन शक्ति सामान्य बालकों के समान होती है। भाषा कौशल की दृष्टि से इन्हे मूर्छित बालक कहा जा सकता है लेकिन ये अशाब्दिक भाषा बौद्धिक कार्य करने में सक्षम होते हैं।

3 सामाजिक तथा व्यावसायिक समायोजन Social and occupational Adjustment ऐसे बालकों की सामाजिक तथा व्यवसायिक विशेषताएँ सामान्य बालकों से अलग होती हैं। ऐसे बालकों में पारस्परिक सम्प्रेषण की समस्या होती है और शाब्दिक अन्तःप्रक्रिया नहीं हो पाती जिससे ये अलग दुनिया में रहते हैं तथा अपने जैसे समूह में ही

सम्बन्ध बनाना पसन्द करते है।
श्रवण बाधित बालकों की समस्याएं

Problems of Hearing Impaired Children

श्रवण बाधित बालको की समस्याओ को दो भागो मे बॉट जा सकता है

1. शैक्षिक समस्याएं Educational Problems -
a. भाषा का विकास नही हो पाता
b. कक्षा मे पढाई गई पाठ्यवस्तु के अधिगम मे कठिनाई
c. Educational achievement का स्तर निम्न
d. परीक्षणो का प्रयोग भली प्रकार नही किया जा सकता।
2. व्यक्तिगत व सामाजिक समस्याएं Personal and Social Pro-
a. समायोजन की समस्या adjustment Problem
b. बालक कुण्ठाग्रस्त Frustrated रहता है
c. मन मे नकारात्मक भाव उत्पन्न होते है अत: स्वभाव मे अस्थिरता रहती है।
d. सामाजिक गतिविधियो मे भाग लेने मे अक्षम
e. पलायन की प्रवृति का उत्पन्न होना

श्रवण बाधित बालको की शिक्षा Education of H. I. Children

1 सम्प्रेषण तकनीकी Communication Technique

ऐसे बालको की सबसे बडी समस्या अपने विचारों के आदान प्रदान करने की है। बालक के सुनने की असमर्थता के कारण वह शिक्षक की बात सुनकर सही अनुक्रिया व्यक्त नही कर पाता। इसके लिये शिक्षक को विशेष सम्प्रेषण तकनीकी अपनानी चाहिये

1) चिन्ह भाषा Sign language - ऐसे छात्रो के लिये शिक्षक को पढाते समय चिन्ह भाषा जो कि हाथ, अंगुलियो और बाजू की सहायता से ~~प्रयोग किया~~ शिक्षित किया जाना चाहिये।

) संकेत भाषा (Cued Speech) - Code language - संकेत भाषा मे होंठो को पढने के

साथ साथ हाथ से मुँह के पास संकेत किये जाते है बोली गयी विषयवस्तु यदि सार्थक हो तो ऐसी स्थिति मे बालक शीघ्र कही गयी बात समझ लेगा।

(c) ओष्ठ पठन Lip Reading- इस विधि मे छात्र केवल ओष्ठ गति व चेहरे की भावभावो को देखकर ही व्यक्ति के द्वारा बोले गये अंश का कुछ अर्थ निकालने का प्रयास करते है लेकिन इस तकनीकी की कुछ कमिया भी है जैसे

(1) एक बाधित व्यक्ति सामान्य गति से बोले गये वाक्य को केवल 25% तक ही समझ सकता है

(2) कुछ ध्वनि निकलते समय होठ समान गति से हिलते है परन्तु अभिभावको तथा शिक्षको के प्रयासो व प्रशिक्षण के बाद बालक उनके द्वारा बोले गये वाक्यो को कुछ स्तर तक समझने का प्रयास करता है

(d) स्पर्श व गति विधि Touch and movement Method

इसमे स्पर्श द्वारा कही गयी बात को समझने का प्रावधान होता है। इसमे शरीर से विभिन्न गतियाँ करवाकर बधिर बालको को शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है।

(e) कक्षा व्यवस्था Class arrangement- श्रवण बाधित बालको के लिये कक्षा मे सामान्य बालको की अपेक्षा ऊँची कुर्सियो की व्यवस्था करनी चाहिये ताकि वह शिक्षक के होठो की गति को पहचान सके।

(f) शिक्षण तकनीकी Teaching Technology- श्रवण बाधित बालको को शिक्षित करने के लिये प्रशिक्षित शिक्षको को नियुक्त करना चाहिये। ऐसे बालको को शिक्षित करने के लिये कुछ तकनीकी कार्यक्रम बनाए जाने चाहिये। विषय वस्तु को सहायक सामग्री की सहायता से पढ़ाया जाना चाहिये तथा पढ़ाई गयी पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित प्रश्न अवश्य पूछने चाहिये ताकि ज्ञात हो सके कि छात्र ने पाठ्यवस्तु को किस सीमा तक ग्रहण किया है।

Scanned by TapScanner

श्रवण बाधित बालकों की शैक्षिक सुविधाएँ

Educational Facilities for Hearing Impaired Children

1. अलग या पृथक कक्षाएँ Segregated classes - कुछ बालक ऐसे होते हैं जिन्हें श्रवण बाधिता दुर्घटनावश या जन्म के कुछ समय बाद होती है तब तक ये भाषा का ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं तथा अपनी शिक्षा सामान्य कक्षा मे प्राप्त कर सकते हैं परन्तु जो बालक गम्भीर रूप से श्रवण बाधित होते हैं उनके लिये अलग कक्षाओं को आयोजित कर शिक्षा प्रदान की जाती है।

2. विशेष एवं पृथक स्कूल Special and Segregated School - जो बालक जन्म से ही श्रवण बाधित हैं उन्हें सामान्य बालकों के साथ शिक्षित नहीं किया जा सकता अतः उनके लिये पृथक विद्यालयों की व्यवस्था की जानी चाहिये जहाँ उन्हें शिक्षित करने के लिये विशेष उपकरण, सामग्री एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था हो।

3. शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन Educational and Vocational guidance - ऐसे बालकों को शिक्षा देने के साथ-साथ उनकी अभिरुचि एवं योग्यता को ध्यान मे रखकर व्यवसायिक प्रशिक्षण भी किया जाना चाहिये। कम से कम शाब्दिक सम्प्रेषण वाले व्यवसाय उनके लिये उपयुक्त रहेंगे जैसे सिलाई, लकड़ी का कार्य

4. ~~शैक्षिक प्रगतिक्रम Educational Progression~~ प्रगतिक्रम Progression - श्रवण बाधित बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसे सामान्य शिक्षा की धारा मे लाना हो यदि वह पृथक विद्यालय तथा पृथक कक्षा में पढ़ता है तो उसकी शैक्षिक प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि वह कब इस योग्य होगा जब वह सामान्य कक्षा मे बैठकर लाभ उठा सकेगा। गम्भीर या पूर्ण रूप से बाधित बालक सामान्य कक्षा का लाभ नहीं उठा पाते परन्तु कुछ विषय जैसे - कला, शारीरिक प्रशिक्षण की कक्षाओं मे वह सामान्य बालकों के साथ बैठकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Scanned by TapScanner